

श्वेतीरथ (श्वेतिस् + रथ) 1) adj. auf Licht einherfahrend: Agni RV. 1,140,1. Soma 9,86,15. Götter überh. 10,63,4. — 2) m. a) der Polarstern TRIK. 1,1,95. H. p. 15 (श्वी°). HIR. 37. — b) eine best. Schlangenart SUCA. 2,265,20. — 3) f. श्वा N. pr. eines mit dem ङोरा sich verbindenden Flusses RAH. 7,33 (Calc. Ausg. भागीरथी). MBH. 6,334. VP. 183. HARIV. LANGL. I, 508. Vgl. श्वेतिरथ्या.

श्वेतीरस (श्वेतिस् + रस) m. eine Art Edelstein R. 2,94,6. VARH. BH. S. 81(80,a); 5. (अलान्) वैद्वर्यान्काञ्चनान्दात्तात्फलैर्श्वेतीरसैः (श्वी°?) adj.) सद् MBH. 4,24.

श्वेतीरूपस्वयम् (श्वेतिस्-रूप + स्व°) m. Svajām̐bhū (Brahman) in der Form von Licht BUAN. Lot. de la b. l. 503. fg.

श्वेतीरूपेश्वर (श्वेतिस्-रूप + ईश्वर) n. N. eines Liṅga Verz. d. Oxf. H. 72, a.

श्वेतीर (von श्वेतिस्) f. P. 5,2,114. oxyt. Sch. parox. TBA. 1) eine mond- helle Nacht H. an. 2,266. MED. n. 8. Gegen. तमिस्रा TBA. 2,2,9,7. — 2) Mondschein AK. 1,1,3,18. H. 107. H. an. MED. SIV. 5,106. °प्रावरणश्वे- त्नुर्दृश्यते ह्युदितो ऽम्बरे R. 3,5,10,22,14,69,1. SUCA. 1,5,8,114,6. PAṆ- KĀT. 162,10. V, 42. न हि संकृते श्वेतीर चन्द्रश्यापडालवेष्मनि HIR. 1,55. अन्वधावत् पापशेषं श्वेतस्त्रे रजनिकारम् BHĀG. P. 4,28,34. पुराणपूर्णाच- न्द्रेण श्रुतिश्वेतीरः प्रकाशिताः MBH. 1,86. Licht, heller Schein überh., pl. BHĀG. P. 3,28,21. Bez. eines der Körper Brahman's VP. 40. BHĀG. P. 3,20,39. — 3) N. einer der 16 Kalā des Mondes BRAHMA-P. in Verz. d. Oxf. H. 18,b. — 4) Bein. der Durgā Devi-P. und Devīm. im ÇKDra. — 5) N. zweier Pflanzen: a) = श्वेतीर्या SVĀMIN zu AK. 2,4,4,6. ÇKDra. — b) = घोषातकी RATNAM. 65.

श्वेतीरकाली (श्वी° + काली) f. N. pr. einer Tochter des Mondes u. Gemahlin Pushkara's, eines Sohnes des Varuṇa, MBH. 5,3534.

श्वेतीरप्रिय (श्वी° + प्रिय) m. ein Freund des Mondscheins, der Vogel Śakora H. 1339.

श्वेतीरावत् (von श्वेतीर) adj. mondhell: निम्, प्रदोष H. an. 2,267. RAH. 6,84. licht, glänzend: इक्षुमुत्र च लहयते श्वेतीरावत्यः काचिद्भुवः BHĀG. P. 4,21,26.

श्वेतीरावत् (श्वी° + वत्) m. Lampengestell TRIK. 2,6,43.

श्वेतीरिका (von श्वेतीर) f. N. einer Pflanze, = कोषातकी AK. 3,4,4,5. — Vgl. श्वेतीरिका, श्वेतीर्या.

श्वेतीर्या f. 1) eine mond- helle Nacht AK. 1,1,3,5. H. an. 2,267. MED. n. 9. — 2) N. einer Pflanze (s. पेटालिका) AK. 2,4,4,6. H. an. MED. — 3) ein best. Parfum (रेणुका) ÇABDA. im ÇKDra. — Fehlerhafte Form für श्वेतीर्या.

श्वेतीरेश (श्वेतीर्या + ईश) m. der Mond H. 104, Sch.

श्वी (aus Ζεύς) m. (nom. श्वीस्) der Planet Jupiter VARH. BH. 2,3.

श्वेतिष (von श्वेतिस्) n. Bez. eines Sāman Ind. St. 3,217.

श्वेतिषिकं m. ein Kenner des Ġjotisha, Astronom, Astrolog gaṇa उक्थादि zu P. 4,2,60. AK. 2,8,4,14. H. 482.

श्वेतीर्य (von श्वेतीर) P. 5,2,103, VĀRTI. 1) adj. mond- hell. — 2) m. die Zeit des Mondscheins, die lichte Hälfte eines Monats (पुष्कपत्) ÇĀKṢH. Ça. 13,19,5. अननाद्यस्तृतीयो श्वेतीरः GOBH. 2,8,1,6. — 3) f. ई a) Vollmondsnacht H. 143. — b) N. einer Pflanze (s. पेटालिका) RĀJAM. zu

AK. 2,4,4,6. ÇKDra. — Vgl. श्वेतीर्या.

श्वेतीरिका f. eine mond- helle Nacht ÇABDA. im ÇKDra. — Wohl eine falsche Form für श्वेतीरिका.

अम् (श्वम्, श्वम्भते (in gebundener Rede auch act.) DhRUP. 10,29. 1)

den Mund aufsperrn; gähnen: अम्भते R. 5,3,4. श्वम्भते ŚĪM. D. 59,20. श्वम्भाण M. 4,48. MBH. 1,5982. 3,11189. 15149. HARIV. 10640. R. 1,16,

7,3,49,34. 5,3,5. BHĀG. P. 5,24,16. (वक्रोपा) रौरदंष्ट्रेण श्वम्भाणः 6,9,16. श्वम्भतो ऽय वदने 2,7,30. SUCA. 1,255,16. श्वम्भती HARIV. 10066. श्वम्भ- त्वा ऀच. GṆH. 3,6. — 2) sich öffnen; vom Munde, Rachen: श्वम्भाणो

— नक्तं चरिमुखे KATHĀS. 25,238. von einer Blume: वर्युवातिमुषार्भं पङ्कजं श्वम्भते ऽय R. 3,25. श्वम्भित = स्फुटित H. an. 3,265. = स्फोटित MED. t. 112. — 3) (weit werden) zurück- schnellen (vom Bogen): अना- लब्धं श्वम्भति गापिडवं धनुर्नाकृता कम्पति मे धनुर्स्या MBH. 5,1909. तदा

तु श्वम्भितं शैवं धनुः R. 1,78,17,19. Auch mit transit. Bed.: चापानि वि- स्फारयतां श्वम्भतां च मुञ्जमुञ्जः R. 3,30,28. — 4) sich ausbreiten, verbrei- ten, sich ausdehnen, an Umfang gewinnen: त्रिदिवोरिक्तिर्भिर्श्वेतिर्श्वम्भा- णो दिशो दश (श्रुतिः) HARIV. 2556. 13943. शक्त्यस्त्रस्य — श्रुतिभिः समस्ततः

— श्वम्भाणाभिः MBH. 9,2696. उर्ध्वं देहात्कर्मणा श्वम्भाणात् 1,8606. अ- शीविष इव कुक्षो श्वम्भितो (könnte auch vom caus. sein) मन्त्रतेजसा । त- द्याद्य भाति कर्षो मे शास्त्रज्वाल इवानलः 7,8198. तृजे श्वम्भसि पापकर्मनिरते

नाथायि संतुष्यसि BHARTṢ. 3,4. स (बोधः) एक एव परमो नित्योदितो श्व- म्भते 41. श्वम्भित = प्रवृद्ध H. an. 3,265. — 5) (sich entfalten) sich erhe- ben, einbrechen, entstehen: गीतधनिरश्वम्भत RĪĀA-TAN. 5,383. उदीपः — अम्भते 269. — 6) (weiten Spielraum haben, nicht beengt sein) sich behaglich —, wohl fühlen: ते भीताः पुरतस्तस्याः पुनरेत्य श्वम्भिते RĪĀA- TAN. 6,283. तस्मिन्वने संयमिनां मुनीनां तपःसमाधेः प्रतिकूलवर्ती । संक- त्ययोनैर्भिमाम्भूतमात्मानमाधाय मधुर्जश्वम्भे ॥ KUMĀRAS. 3,24. देवदत्तो ऽपि

— श्वम्भे ऽनन्यपुत्रस्य अश्रुस्य विभूतिषु KATHĀS. 7,103. विश्वेरेव तयो- ऽध्यक्षस्तेजसो ऽत्ते न श्वम्भते HARIV. 12073. — Vgl. श्वम्, श्वम्भते, श्वम्भित

n. s. bes. — caus. श्वम्भयामि Jmd den Mund öffnen lassen, gähnen machen: करं स श्वम्भयामास HARIV. 10632. तेनाश्रु श्वम्भितः 10633.

— अग्निं den Rachen aufsperrn gegen Etwas: लङ्कामभिमुखः कोपाद- भीहृषां यो ऽभिश्चम्भते R. 6,2,18.

— उद् 1) sich öffnen, sich weit aufthun: प्रीत्युज्जम्भितलोचन BHĀG. P. 1,6,16. — 2) sich entfalten, hervorbrechen, ausbrechen, sich erheben: एकाभिषप्रभवमेव सकोदराणामुज्जम्भते वैरम् PRAB. 10,2. NAISS. 2,105. वसतः संततोऽज्जम्भितानङ्गप्रङ्गार एव DHŪRTAS. 69,5. — Vgl. उज्जम्भ fgg.

— समुद् 1) sich ausbreiten, sich ausdehnen: कुर्वन्नञ्जनमेचका इव दि- शो मेघः समुज्जम्भते MRĪĪH. 84,24. — 2) sich erheben, hervorbrechen, ausbrechen: वैरम् Sch. zu PRAB. 10,2. — 3) sich anschicken, mit dem

indn.: व्यालं बालम्पालतत्तुभिरतो रोद्धुं समुज्जम्भते BHARTṢ. 2,6.

— प्र zu gähnen anfangen: प्राश्वम्भत — निद्रावशगतः MBH. 3,11185.

— वि 1) den Rachen —, den Mund aufsperrn; gähnen: सिंको वि- श्वम्भती AIR. BU. 6,55. यथा विश्वम्भते सिंकोः R. 5,3,4. व्यज्जम्भत मरुत्सि- ङ्काः MBH. 3,11110. यदिश्वम्भते (अश्वः) ÇAT. BR. 19,6,4,1. उत्थाय च विश्व- म्भते क्रोधेन करिपूषपाः R. 6,2,22. प्रबुद्धाय स्वाकां विश्वम्भमाणां स्वा- ङ्कां VS. 22,7. MBH. 5,282. R. 6,37,65. व्यज्जम्भत् 64. व्यज्जम्भित BHARTṢ. 15,108. विश्वम्भित gähnend HARIV. 10635. 10637. विश्वम्भितमिवात्तरि-